



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पन्नार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दोर भूमि	23-7-23	9	1-7

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ : कुलपति

हकृषि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

हरिनूति न्यूज | हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवार्ड प्रदान किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वां वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज



हिंसार। हकृषि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

उत्पादन में बहुत सहायनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाते वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फार्म, स्टेम बोर्डर जैसे कौनों के प्रति प्रतिरोधी है व वे-रीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. फर्नी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, उत्तपाल, एनकरोज, बीदल शर्मा एवं मन्जोत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

एचजेएच 1513 व एचजे 1514 हरियाणा में बिजार्ड के लिए चिन्हित

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्मों हरियाणा राज्य में बिजार्ड के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह मॉडे व जूरी किस्म है जिसकी 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह फली रोमों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फार्म व स्टेम बोर्डर कौनों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी कुमारी, डीएस फोगाट, सत्यवान जार्य, एसके पाहुजा, उत्तपाल, मीरजा करोज, कजरंग लाल शर्मा, दरविंदर पाल सिंह, मन्जोत सिंह व सरिता बेबी को जाता है। इनमें प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह फली रोमों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फार्म व स्टेम बोर्डर कौनों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों ने डॉ. पी कुमारी, डीएस फोगाट, एसआर्य, एसके पाहुजा, उत्तपाल, मीरजा करोज, कजरंग लाल शर्मा, दरविंदर पाल सिंह, विवी कुमार व सरिता बेबी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिना 4 21/2/20	23-7-23	2	3-7

हकृवि के चारा अनुभाग को सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

जागरण संवाददाता, हिंसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्व श्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवार्ड प्रदान किया है। भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक डा. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-



हकृवि के चारा अनुभाग की टीम को अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। • विज्ञापित

ज्वार की नई किस्मों की ये हैं विशेषताएं, यह पशुओं के लिए बहुत उत्तम

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। ज्वार की सीएसवी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित

किया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फलाई, स्टेम बोरर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इसे डा. पम्मी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

चक्र की उत्पादन तकनीक हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड मिला है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्मों विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एक किस्म, एचजेएच-1513 व

एचजे-1514 हाल ही में विकसित की किस्में हैं। इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई है। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डा. पी कुमारी, डीएस फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पञ्जाब केसरी	23-7-23	4	1-2



हकृषि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हकृषि के चारा अनुभाग को दूसरी बार मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार, 22 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53 वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटैश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की

» ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ : कुलपति

समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस

अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सी.एस.वी.-53 एफ किस्म, एच.जे.एच.-1513 व एच.जे.-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
31 मई 23 जाला	23-7-23	3	1-4

बैठक

इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्मों की हैं विकसित, राष्ट्रीय स्तर पर मिला है सम्मान

चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड



हकृषि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान हैदराबाद की ओर से आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना

(ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में यह अवॉर्ड प्रदान किया गया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन में बेहतरीन कार्य किया है। इसके साथ ही ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में

ये किस्मों की तैयार

ज्वार की किस्म : सीएसवी 53 एफ
औसत पैदावार : 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : शूट फलाई, स्टेम बोअर, ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप प्रतिरोधी

विकसित करने वाली टीम : डॉ. पम्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह।

किस्म : एचजेएच 1513, एचजे 1514

पैदावार : 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : मीठी व जूसी किस्म, 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता, पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व

स्टेम बोअर कीड़ों के प्रति सहनशील
टीम : डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी।

किस्म : एचजे 1514- 664

पैदावार : क्विंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : अधिक प्रोटीन, पत्ती रोग प्रतिरोधी व शूट फलाई - स्टेम बोअर के प्रति सहनशील

टीम : डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, एस. आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी।

बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्मों विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में

विकसित की गई किस्मों हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दिनांक 23-7-23

3

3-6

अतीवर्ष • ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में प्रदेश में बिजाई के लिए चिह्नित की हकृवि के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर फिर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

भारत न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड मिला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना ज्वार की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक खाद्य एवं चारा फसल डॉ. एस्के प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया विवि के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं।



दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हाईब्रिड हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस्के पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाईब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मोठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोअर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डा. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस्के पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोअर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस्के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।

ज्वार की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोअर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डा. पम्मी कुमारी, एस्के पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय .

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उजाला समाचार	23-7-23	5	3-6

हकृति के चार अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. काम्बोज

हिसार, 22 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग को ज्वार फसल पर उच्च अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटैश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सहायनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एक किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में

विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता

फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोअर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार



हकृति के चार अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फलाई, स्टेम बोअर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ब्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चार अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डी.एस.

एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फलाई व स्टेम बोअर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीनक रिबून	23-7-23	10	3-5

हकृवि को दूसरी बार मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड

हिसार, 22 जुलाई (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नयी दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.07.2023	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवॉर्ड

सिटी पल्स न्यूज, हिंसाऱा। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फसलोत्पत्ति व पोटाश जैसे पोषक



सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवॉर्ड मिलने पर बड़ई देते कुलपति प्रो. काम्बोज।

तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समय सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सहायनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जित राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार

की सीएसवी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किबंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, एस.के. पाहुजा, डी.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे

1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इनमें से एचजेएच 1513 एक कटाई वाली हड़बिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किबंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलवींदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।

इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किबंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलवींदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	22.07.2023	--	--

हकृषि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ

नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वाँ वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटेश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र को उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार



की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को

बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएं; विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	22.07.2023	--	--

हिन्दुस्थान समाचार



हिसार: एचएयू के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

17hr - 1 shares



हिसार, 22 जुलाई (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय बीज अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एमके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बधाई देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फसलरोग व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-छाक की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिकाइयों अनुसंधान करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके हरितगत यह अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि यह किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/मुम्बई/संजीव



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	22.07.2023	--	--

चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

नम-छोर न्यूज 22 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को न्वर फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कान्छोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सर्वोत्कृष्ट अनुसंधान परिषेजक (न्वर) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उत्कृष्ट परिषद के सहायक महाविदेशीक (छात्र एवं चारा फसल) डॉ. एमके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में न्वर की उत्कृष्ट किस्मों के विकास, न्वर में फायनेरस व पोटास जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, न्वर-सरासीय फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय न्वर की समग्र सिंचनीय अनुसंधान करने के साथ न्वर के बीज उत्पादन में बहुत सफल कार्य किए हैं जिनके कारण ने अवार्ड प्राप्त किया है। इस अनुभाग ने अब तक न्वर की 13 उत्कृष्ट किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसजी-53 एक किस्म, एनजेए-



1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलक्ष्य के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किस्मों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. जितें राम शर्मा ने न्वर की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन क्षेत्रीय किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनीयता अधिक होने के कारण वे पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया न्वर की सीएसजी 53 एक एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के न्वर उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुसंधान किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. एम

कुमारी, एमके पशुजा, सीएस फोरेस्ट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं सरनीय सिंह की टीम ने विकसित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिपति डॉ. एमके, पशुजा ने बताया न्वर की एनजेए 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजुई के लिए चिनिता की गई हैं। इनमें से एचजेए 1513 एक कटाई वाली हाईयिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह सीडी व जूमी किस्म है जिसने 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनीयता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 644 व सूखे चारे की पैदावार 161 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	22.07.2023	--	--

हकृषि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

पांच बजे ख़बर

दिल्ली में भारतीय पशु विज्ञान संस्थान के प्रांत अनुसंधान की सेवा केन्द्रों का 100वाँ जन्मदिन मनाया गया। इस अवसर पर 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के प्रांतगत कोषीय अनुसंधान में यह अवार्डों में हकृषि अनुसंधान केन्द्र को सर्वश्रेष्ठ अवार्ड प्रदान किया गया है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रांत अनुसंधान केन्द्रों के अध्यक्षों को अवार्ड प्रदान किया गया।



इस अवसर पर प्रांतगत कोषीय अनुसंधान केन्द्रों के अध्यक्षों को अवार्ड प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रांतगत कोषीय अनुसंधान केन्द्रों के अध्यक्षों को अवार्ड प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रांतगत कोषीय अनुसंधान केन्द्रों के अध्यक्षों को अवार्ड प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रांतगत कोषीय अनुसंधान केन्द्रों के अध्यक्षों को अवार्ड प्रदान किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.07.2023	--	--

हकृवि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 22 जुलाई : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक



महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटैश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफरिसें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत

सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्मों विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एक किस्म, एचजेएच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्मों हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्मों किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। विश्वविद्यालय के

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्मों हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलचिंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	22.07.2023	--	--

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ हकृषि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड : कुलपति प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज
हिसार, 22 जुलाई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार पशुपालकों के लिए उत्कृष्ट अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.एम. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय जीवन अनुसंधान परिषद, हैदराबाद द्वारा आयोजित अंतरिम भारतीय पशुपालक अनुसंधान परिषद (ज्वार) को 13वीं वार्षिक समूह बैठक में उत्कृष्ट परिषद के महासचिव महोदयों (ज्वार एवं चारा पशुपालक) डॉ. एम.के. प्रभास ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की ज्ञान विधियों के विकास, ज्वार से प्राप्तोत्पादों व पेटेंट्स जैसे क्षेत्रों के अर्थव्यवस्था, ज्वार-आरोग्य, पशुपालक-पशु की उपज, उपज-उत्पादन

विश्वीकरण करने, बहुस्तरीय ज्वार की ज्ञान विधियों को अनुसंधान करने के साथ ज्वार के बीच उपज, उपज में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए हैं जिसके फलस्वरूप वे अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 ज्ञान विधियों विकसित की हैं। इनमें से बीजकृषि-53 एक किण्व, एचएचए-1513 व एचएच-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस अवसर पर चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि वे किस्में विकसित व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगे।

ज्वार की नई किस्में की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान विभाग डॉ. जीत राम शर्मा ने कहा की नई किस्में की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन दोनों किस्में में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण वे पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की बीजकृषि 53 एक एक बटॉट वाली किस्म है जिसकी दल के ज्वार



उत्पन्न करने वाली ज्वारों के लिए अनुसंधान किया गया है। इस किस्म की दल को औसत पैदावार 483 किलो प्रति हेक्टेयर है। यह बहुत फलदायी, जल कोर जैसे बीजों के प्रति प्रतिरोधी है व डे-लीक स्पॉट व बहुत निरुप बीजों के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. शर्मा, कुशवा, एम.के. पट्टनाय, डॉ.एम. प्रोभास, सारंगधर, एम. शशीश, डॉ.एम. शर्मा एवं मन्मोहन मिश्र की टीम ने विकसित किया है। कृषि महोदयों के अध्यक्षता डॉ. एम.के. पट्टनाय ने कहा ज्वार की एचएचएच 1513 व एचएच 1514

किस्में हरियाणा राज्य में किसानों के लिए विकसित की गई हैं। इनमें से एचएचएच 1513 एक बटॉट वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी दल को औसत पैदावार 717 किलो प्रति हेक्टेयर है। यह बीजों व पशुओं के लिए 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 52 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पशुओं के प्रति प्रतिरोधी व बहुत फलदायी व जल कोर बीजों के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को विकसित करने का टीम डॉ. कुशवा, डॉ.एम. प्रोभास, सारंगधर, एम.के. पट्टनाय, सारंगधर, जीत राम शर्मा, उत्कर्षित चरण सिंह,

मन्मोहन मिश्र व शशीश देवी की ज्वार है। इसी प्रकार एचएच 1514 एक बटॉट वाली किस्म है जिसकी दल को औसत पैदावार 664 व पशुओं को औसत पैदावार 551 किलो प्रति हेक्टेयर है। यह औसत प्रोटीन वाली किस्म है। यह पशुओं के प्रति प्रतिरोधी व बहुत फलदायी व जल कोर बीजों के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुशवा, डॉ.एम. प्रोभास, एम. शर्मा, एम.के. पट्टनाय, सारंगधर, जीत राम शर्मा, उत्कर्षित चरण सिंह, शशीश देवी शामिल हैं।